ॐ

* नाम माहात्म्य *

--⊱❀⊰--

उपदेश संग्रह

दोहा

कबिरा हरिके नाममें, बात चलावे और ।
उस अपराधी जीवको, तीन लोक नहि ठौर ॥
तुलसी माया नाथ की, घट घट आन अड़ी ।
किस किसको समझाइये, कूएं भाँग पड़ी ॥
है नियरे दीखे नहीं, धिक धिक ऐसी जिन्द ।
तुलसी या संसार के, हुआ मोतिया बिन्द ॥
कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय ।
आप ठगे सुख होत है, और ठगे दुख होय ॥
पपिहा प्रण कबहुँ न तजे, तजे तो तन बेकाज ।
तन छूटे तो कुछ नहीं, प्रण छूटे तो लाज ॥
मन दिया कहीं और ही, तन साधों के सङ्ग ।
कहे कबीर कोरी रही, कैसे लागे रङ्ग ॥
मन गया तो जान दे, दृढ़ कर राख शरीर ।
बिद्य चढ़ो कमान बिन, कैसे छूटे तीर ॥
जिन जैसा सत्सँग किया, वैसा ही फल लीन ।
कदली सींप भुजंग मुख, बून्द एक गुण तीन ॥
हरिजन से तो रूठना, संसारी से हेत ।
सो नर ऐसे जाँयगे, ज्यों मूरी का खेत ॥

सब बन तो चन्दन नहीं, शूरों का दल नाहिं।
सब सिंधू मोती नहीं, त्यों साधु जग माहिं॥
सिहों के लहडे नहीं, हंसों की नहिं पाँत।
लालोंकी नहिं बोरियां, सन्तों की न जमात॥
बहता पानी निर्मला, पड़ा गन्दला होय।
साधू तो रमता भला, दाग न लागे कोय॥
देह धरे का दण्ड है, सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय॥
तरुवर पत्तों से कहे, सुनों पात इक बात।
या घर येही रीति है, इक आवत इक जात॥
जो ऊगै सो अस्त हो, फूले सो कुम्हलाय।
चिनिया मंदिर गिरपड़े, जनमे सो मर जाय॥
साधु सती अरु सूरमा, ज्ञानी अरु गजदन्त।
यह निकसे नहिं बाहुड़े, जो जुग जाय अनन्त॥
हंसा बगुला एक सा, मान सरोवर माहिं।
बगुला ढूंढ़े माछली, हंसा मोती खाहिं॥
निंदक एकौ मत मिलौ, पापी मिलो हजार।
एक निंदक कै शीशपर, सहस पाप को भार॥
निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करत सुभाय॥
आतमा अनुभव ज्ञानकी, जो कोइ पूछे बात।
ज्यों गूंगा गुड़ खाय के, कहे कौन मुख स्वाद॥
सभी खिलौना खाँड़ में, खाँड़ खिलौना नाहिं।
तैसे सब जग ब्रह्म में, ब्रह्म जगत है नाहिं॥

तत्त्व वस्तु जिसको मिली, सो क्यों करत पुकार।
सूरदास की कामिनी, किसपर करे सिंगार॥
काम बिगाड़े भक्तिको, ज्ञान बिगाड़े क्रोध।
लोभ विराग बिगाड़दे, मोह बिगाड़े बोध॥
साँचे बिन सुमिरन नहीं, भय बिन भक्ति न होय।
पारस के परदा रहे, कंचन किस बिध होय॥
आशा तो एक राम की, दूजी आशः निराश।
नदी किनारे घर करे, कभी न मरे पियास॥
लघुता से प्रभुता बढ़े, प्रभुता से प्रभु दूर।
कोड़ी मिश्री खात है, हस्ती फाँकत धूर॥
नानक नन्हा हो रहो, जैसी नन्हीं दूब।
और घास जल जायंगी, दूब रहेगी खूब॥
करनी बिन कथनी कथे, गुरुपद लहे न सोय।
बातों के पकवान सों, धापे नाहीं कोय॥
तुलसी गुरु प्रताप से, ऐसी जान पड़ी।
नहीं भरोसा श्वास का, आगे मौत खड़ी॥
तुलसी विलंब न कीजिये, भजिये नाम सुजान।
जगत मजूरी देत है, क्यों राखे भगवान॥
प्रारब्ध न्योतो दियो जब लग रहे शरीर।
तुलसी चिंता मत करो, भज लो श्रीरघुवीर॥
माला मन से लड़ पड़ी, तू मत बिसरे मोय।
बिना शस्त्र के शूरमा, लड़त न देखा कोय॥
भजन करन को आलसी, भोजन को हुशियार।
तुलसी ऐसे पतित को, बार बार धिक्कार॥

अरब खरब लों द्रव्य है, उदय अस्त लों राज।
बिना भक्ति भगवान की, सभो नरक का साज॥
तुलसी या संसार में, पाँच रतन हैं सार।
संतमिलन अरु हरिभजन, दया दीन उपकार॥
तुलसी या जग आयके, कर लीजे दो काम।
देने को टुकड़ा भला, लेने को हरि नाम॥
सत्य वचन आधीनता, परतिय मात समान।
इतने में हरि ना मिलें, तुलसीदास जमान॥
राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार॥
धन जोबन यों जायगो, जा विधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज, क्यों चाटै जग धूर॥
राम नाम का अङ्क है, सब साधन है सून।
अङ्क गये कछु हाथ नहिं, अङ्क रहे दशगून॥
राम नाम जपते रहो, जबलग घट में प्रान।
कबहुँ तो दीनदयाल के, भनक परैगी कान॥
काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह की धार।
तिनमें अतिदारुण दुखद, मायारूपी नार॥
राम भरोसे राख ले, अपने मन के माहिं।
कारज सबै संवारि हैं, बिगरे भी कछु नाहिं॥
राम भरोसा छांड़ के, करैं भरोसा और।
सुखसंपति की क्या कहूँ, नरक न पावै ठौर॥
तनकर मनकर वचनकर, देत न काहू दुःख।
तुलसी पातक झरत हैं, देखत उनका मुक्ख॥

एक भरोसो एक बल. एक आश विश्वास।
स्वाती सलिल हरिनामहै, चातक तुलसीदास ॥
तुलसी सोई चतुर है, संत-चरण लवलीन।
परमन परधन हरन को, वेश्या बड़ी प्रवीन ॥
पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम ॥
पढ़ पढ़के सब जग मुवा. पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़ै सो पण्डित होय ॥
क्या मुखले हंस बोलिये, तुलसी दीजे रोय।
जन्म अमोलक आपना, चजे अकारथ खोय ॥
नारायण हरि भजन में, तू जनि देर लगाय।
क्या जाने या देर में, श्वास रहै की जाय ॥
अपनो साखी आप तू, निज मन माहिं विचार।
नारायण जा खोट है, ताको तुरत निकार ॥
नारायण तू भजन कर, कहा करेंगे कूर।
अस्तुति निन्दा जगतकी, दोऊन के शिर धूर ॥
दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्यान।
नारायण एक मौत को, दूजे श्रीभगवान ॥
मगन रहे नित भजनमें, चलत न चाल कुचाल।
नारायण ते जानिये, यह लालन के लाल ॥
विद्यावंत स्वरूप गुण, सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरिभक्ति बिन, यह सब ही हैं रोग ॥
चार दिनन की चाँदनी, यह संपत्ति संसार।
नारायण हरि भजनकर, जासों होय उबार ॥

नारायण सतसंग कर, सीख भजन की रीत ।
काम क्रोध मद लोभ में, गई आरवल बीत ॥
नारायण जब अंत में, यम पकरेंगे बाँहि ।
तिनसों भी कहियो हमें, अभी सोफतो नाँहि ॥
बाँट खाय हरि को भजे, तजै सकल अभिमान ।
नारायण ता पुरुष को, उभय लोक कल्यान ॥
बहुत गई थोरी रही, नारायण अब चेत ।
काल चिरैया चुग रही, निश दिन आयु खेत ॥
तेरे भावें कुछ करो, भलो बुरो संसार ।
नारायण तू बैठिके, अपना भवन बुहार ॥
संत सभा झाँकी नहीं, कियो न हरिगुण गान ।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्यान ॥
नारायण मैं सच कहूं, भुज उठाय के आज ।
जो जिय बने गरीब तू, मिलें गरीब निवाज ॥
विद्या पढ़ करते फिरें, औरन को अपमान ।
नारायण विद्या नहीं, ताहि अविद्या जान ॥
कथनी कथ केते गये, कर्म उपासन ज्ञान ।
नारायण धारों युगन, करणी है परमान ॥
जिनको मन निजवश भयो, तजकर विषय विलास ।
नारायण ते घर रहो, करो भले बनवास ॥
नारायण सुख भोग में, मस्त सभी संसार ।
कोउ मस्त वा मौज में, देखो आँख पसार ॥
नारायण या जगत में, यह दो वस्तू सार ।
सबसों मीठो बोलिबो, करनो पर उपकार ॥

नारायण परलोक में, यह दो आवत काम।
देना मुट्ठी अन्न की, लेना भगवत नाम॥
कियो न मानत औरको, परहित करत न आप।
नारायण ता पुरुष को, मुख देखे को पाप॥
नारायण दो बात को, दीजे सदा बिसार।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार॥
तज पर अवगुण नीरको, छीर गुणन सों प्रीत।
हंस संत की सर्वदा, नारायण यह रीत॥
तनिक मान मन में नहीं, सबसों राखत प्यार।
नारायण ता संत पै, बार बार बलिहार॥
अति कृपालु संतोष वृत्ति, युगल चरण में प्रीत।
नारायण ते संतवर, कोमल वचन विनीत॥
जिनके पूरण भक्ति है, ते सबसों आधीन।
नारायण तज मान मद, ध्यान सलिल के मीन॥
नारायण हरि भक्ति की, प्रथम यही पहिचान।
आप अमानी हो रहै, देत और को मान॥
नारायण होवैं भले, जो कछु होवनहार।
हरि सों प्रीत लगाय के, अब कहा सोच विचार॥
जो शिर साँटे हरि मिलें, तो हरि लीजै दौर।
नारायण ऐसी न हो, गाहक आवै और॥
लगन लगन सबही कहैं, लगन कहावै सोय।
नारायण जा लगन में, तन मन दीजै खोय॥
नर संसारी लगन में, दुख सुख सहैं करोर।
नारायण हरि प्रीत में, जो होवै सो थोर॥

नारायण हरि लगन में, ये पाँचों न सुहात।
विषय भोग निद्रा हँसी, जगत-प्रीत बहु बात॥
दादू नीका नाम है, आप कहें समुझाय।
और काम सब छोड़के, हरिजी सों चितलाय॥
श्वासो श्वास सम्भालतो, इक दिन मिलिहै आय।
सुमिरन रस्ता सहजका, सद्गुरु दिया बताय॥
जीवन माटी हो रही, साँई सन्मुख होय।
दादू पहिले मर रहो, पीछे मरे सब कोय॥
नोउ दुवारे नरकके, निशि दिन वहै धलाय।
सोच कहाँ लग कीजिये, नाम सुमिर गुणगाय॥
दादु नीको नाम है, तीन लोक ततसार।
रात दिवस रटिवो करो, रे मन यही विचार॥
दादू नीका नाम है, सो तू हिरदय राख।
पाखंड सारे दूर कर, सुन साधुन की साख॥
नारायण को ध्यान धर, पल पल नाम चितार।
सार एक हरि नाम है, जगत-विषय बिन-सार॥
सुजन दया निजपर करें, अपना करें उधार।
भजें हरी हर अहर्निश, तजें कुटिल परिवार॥
भाँग तमाखू धतूरा, उतर जात परभात।
नाम खमीरी ना मिटे, चढ़ी रहे दिन रात॥
प्रीत भलो हरिनाम सों, काय कसौटी दुःख।
नाम बिना किस कामकी, दादू संपति सुक्ख॥
जो तोकों काँटा बुवे, ताको बो तू फूल।
तोकों फूल के फूल हैं, वाकी को तिरशूल॥

मूरख का मुख बाँबिया, निकसत वचन भुजङ्ग।
वाकी औषधि मौन है, जहर न व्यापै अङ्ग॥
कहा करैं वैरी प्रवल, जो सहाय बलवीर।
दशहजार गज बलघट्यो, घट्यो न दश गज चीर॥
लौ लागी तब जानिये, जगसों रहे उदास।
नाम रटे निर्भय कला, हरदम हीरा पास॥
लौ लागी तब जानिये, जगसों रहे उदास।
नाम रटे निरद्वन्द हो, अनहद पुर में बास॥
आठ पहर सुमिरन करै, विसरे ना क्षण एक।
अष्टादश अरु चार में, सहजो यही विशेष॥
नाम जपा जिन सब किया, योग यज्ञ आचार।
जप तप तीरथ परशुराम, सभी नाम की लार॥
पढ़ना गुनना सहज है, फिर आवे चारों धाम।
करड़ा देखा पर्शुराम, राम भजन का काम॥
संयम नियम विचार के, जपै निरन्तर नाम।
ध्यान करत हो जाय सो, हरि का रूप ललाम॥
नानक दुखिया सब संसारा।
जो सुखिया सो नाम अधारा॥
सच्चित् आनन्द रूप हो, वाह गुरु सद्गुरु नाम।
नाम भेद जिन पाइया, पूरण हो ये काम॥
श्वास श्वास पै नाम भज, श्वास न विरथा खोय।
ना जाने इस श्वास का, आवन होय न होय॥
कथा कीर्तन करन की, जाके निशि दिन रीति।
कह कबीर वा दास से, निश्चय कीजै प्रीति॥

आयो प्रभु शरणागती, किरपासिन्धु दयाल ।
एक अक्षर हरि मन बसै, नानक होत निहाल ॥
गोविन्द गुण गायो नहीं, जन्म अकारथ कीन ।
कह नानक हरि भज मना, जेहि विधि जलको मीन॥
बृद्ध भयो सूझै नहीं, काल जो पहुंचो आन ।
कह नानक नर बावरे, क्यों न भजे भगवान ॥
जेहि सुमरे गति पाइये, तेहि भज रे तू मीत ।
कह नानक हरि भज मना, अवधि घटत है नीत ॥
घट घट में हरिजू बसै, संतन कह्यो पुकार ।
कह नानक तेहि भज मना, भवनिधि उतरहि पार ॥
भय नाशन दुरमति हरन, गतभय हरिको नाम ।
निशिदिन जो नानक भजे, सफल होय तेहि काम ॥
जिह्वा गुणगोविन्द भजु, कर्ण सुनहु हरिनाम ।
कह नानक सुन रे मना, परै न जम के धाम ॥
जो प्राणी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार ।
कह नानक आपुन तरै, औरन लेत उधार ॥
प्राणी कछू न चेतहीं, मन माया के अन्ध ।
कह नानक बिन हरिभजन, परत ताहि यम फन्द ॥
साथ न चाले बिन भजन, विषया सकलो छार ।
हरि हर नाम कहो मना, नानक यह धन सार ॥
मन माया में फँस रह्यो, बिसरयो गोविंद नाम ।
कह नानक हरि भज मना, जीवन कौने काम ॥
सुख में बहु संगी भये, दुखमें संग न कोय ।
कह नानक हरि भज मना, अन्त सहाइ होय ॥

जन्म जन्म भरमत फिरथो, मिटो न यम की त्रास।
कह नानक हरि भज मना, निर्भय पावहिं बास॥
चिन्ता छोड़ जो अड़ रहै, सुरत शब्द में राख।
गुरू सहायक होत हैं, सन्तों की है साख॥
कबीर मन तो एक है, चाहे जहाँ लगाय।
चाहे हरि की भक्ति कर, चाहे विषय कमाय॥
कवीर छुधा कूकरी, करत भजन में भंग।
याको टुकड़ा डार कर, सुमिरन करो निशंक॥
नामरतन धन मुज्झ में, खान खुली घट माहिं।
सेंत मेंत ही देत हूँ, गाहक कोई नाहिं॥
दुखमें सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुखमें सुमरिन करै, तो दुख काहे होय॥
सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय।
रञ्चक घट में संचरे, सब तन कंचन होय॥
हरिका सुमिरन छोड़ के, पाल्यो वहुत कुटम्ब।
धन्दा करते मर गया, भाई रहा न वन्ध॥
जागन से सोवन भलो, जो कोइ जाने सोय।
अन्तर लव लागी रहै, सहजहि सुमिरन होय॥
बाद बिवादाँ विस घना, बोले वहुत उपाध।
मौन गहे सब की सहे, सुमरे नाम अगाध॥
पढ़ना गुनना चातुरी, यह तो बात सहल्ल।
कामदहन मन बसकरन, गगन चढ़न मुशकल्ल॥
नाम भजो मन बस करो, यही बात है तन्त।
काहे को पढ़ पच मरो, कोटिन ज्ञान ग्रन्थ॥

कबीर मन गाफिल भयो, सुमिरन लागे नाहिं ।
घनी सहैगा त्रासना, जमकी दरगह माहिं ॥
कबीर यह मन लालची, समझै नाहिं गँवार ।
भजन करन को आलसी, खाने को हुशियार ॥
आज कहै मैं कल भजूं, काल कहै फिर काल ।
आज काल के करत ही, औसर जासी चाल ॥
सुख के माथे सिल पड़ी, जो नाम हृदयसे जाय ।
बलिहारी वा दुःख की, जो पल पल नामजपाय॥
सुमरन सुरत लगाय कर, मुख ते कछू न बोल ।
बाहर के पट देयकर, अन्दर के पट खोल ॥
नाम जपत कन्या भली, साकित भला न पूत ।
छेरी के गल गलथना, जामें दूध न मूत ॥
नाम जपत कुष्टो भला, चुइ चुइ पड़े जो चाम ।
कंचन देही काम किस, जा मुख नाहीं नाम ॥
मारग चलते जो गिरें, ताको नाहीं दोस ।
कह कबीर बैठा रहै, ता सिर करड़े कोस ॥
कहता हूँ कह जात हूँ, कहा बजाऊँ ढोल ।
श्वासा खाली जात है, तीनलोक का मोल ॥
सुमरन सों मन लाइये, जैसे कीट भिरङ्ग ।
कबीर बिसारे आपको, होये जाय तेहि रङ्ग ॥
सुमरन को सुधि यों करो, ज्यों गागर पनिहार ।
हाले डोले सुरत में, कहै कबीर विचार ॥
लेने को हरि नाम है, देने को अन दान
तरने को आधीनता, डूबन को अभिमान ॥

जबहीं नाम हृदय धरा, भया पाप का नास।
मानो चिनगी आग की, पड़ी पुरानी घास॥
सोता साधु जगाइये, करे नाम का जाप।
यह तीनों सोते भले, साकित सिंह अरु साँप॥
हरि सम जग कछु वस्तु नहिं, प्रेम पंथ सम पंथ।
सतगुरु सम सज्जन नहीं, गीता सम नहिं ग्रंथ॥
ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपौ शीतल होय॥
हाड़ जलें ज्यों लाकड़ी, केश जलें ज्यों घास।
सब जग जलता देखकर, भये कबीर उदास॥
तिरिया है दुर्गन्ध अरु, रुधिर मूत्र का गेह।
सुख स्वपने रञ्चक नहीं, समझ हृदय में एह॥
संसारी का टूकड़ा, नौं नौ आंगल दाँत।
भजन करैं तो ऊबरे, नातर फाड़े आँत॥
तू तू करता तू भया, मुझ में रहा न हूँ।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूँ तित तूँ॥
कबिरा सूता क्या करे, उठ किन जपहु मुरार।
इक दिन सोवन होयगो, लाँबे पैर पसार॥
तीरथ न्हाए एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनेक फल, कहें कबीर विचार॥
जाको राखे साइयाँ, मार सके नहिं कोय।
बाल न बाँका कर सके, जो जग वैरी होय॥
जो कछु आवे सहज में, सोई मीठा जान।
कड़वा लागे नीम सा, जामें खैंचा तान॥

राजदुवारे साधुजन, तीन वस्तु को जाय।
कै मीठा कै मान को, कै माया की चाय॥
ऐरण की चोरी करें, करे सुई को दान।
ऊँचे चढ़ चढ़ देखहीं, आवत कहाँ विमान॥
संस्कृत तो है कूप जल, भाषा बहता नीर।
भाषा सतगुरु सहित जो, सतगुरु गहन गंभीर॥
ब्रह्म रूप है ब्रह्मवित्, ताकी वाणी वेद।
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद॥
गिरिये पर्वत शिखर से, पड़िये धरणि मंझार।
दुष्ट संग नहिं कीजिये, डूबे काली धार॥
कबिरा सोई पीर है, जो जाने परपीर।
जो पर पीर न जानहीं, सो काफिर वेपीर॥
तरुवर सरवर सतजन, चौथे बरसे मेह।
परमारथ के कारणे, चारों धारें देह॥
कबिरा कलियुग कठिन है, साध न मानै कोय।
कामी क्रोधी मसखरा, तिनका आदर होय॥
सब से भली मधूकरी, भाँति भाँति का नाज।
दावा काहू का नहीं, बिना बुलाये राज॥
प्रीति बहुत संसार में, नाना विधि की सोय
उत्तम प्रीति सो जानिये, जो सतगुरु सों होय॥
सम दृष्टि सतगुरु किया, मेटा भरम विकार।
जहँ देखूँ तहँ एक ही, साहिब का दीदार॥
खुला खेल संसार में, बाँध सके नहिं कोय।
घाट जगाती क्या करे, जो सिर बोझ न होय॥

मोमें इतना बल कहाँ, गाऊँ गला पसार।
बंदे को इतनी घनी, पड़े रहे दरबार॥
स्वामी हो संग्रह करे, दूजे दिन को नीर।
तरे न तारे और को, यों कथ कहैं कबीर॥
कथा कीरतन कलि विषे, भवसागर की नाव।
कह कबीर जग तरन को, नाहीं और उपाव॥
कथा कीर्तन रात दिन, जाके उद्यम येह।
कह कबीर ता साधु की, हम चरनन की खेह॥
जब गुण का गाहक मिले, तब गुण लाख बिकाय।
जब गुण का गाहक नहीं, तब कौड़ी बदले जाय॥
हीरा परखे जौहरी, शब्द को परखे साध।
जो कोई परखे साध को, ताकी मतो अगाध॥
साधू मेरे सब बड़े, अपनी अपनी ठौर।
शब्द विवेकी पारखी, वह माथे की मौर॥
रूखा सूखा पायकर, ठंडा पानी पीय।
देख पराई चोपड़ी, क्यों ललचावे जीय॥
आधी अरु रूखी भली, सारी सों संताप।
जो चाहेगा चोपड़ी, तो बहुत करेगा पाप॥
कबीर साईं मुज्झको, रूखी रोटी देय।
चुपड़ी माँगत मैं डरों, मत रूखी छिन लेय॥
खुश खाना है खीचड़ी, माँहि पड़ टुक नोन।
माँस पराया खायकर, गला कटावे कौन॥
कहता हूँ कह जात हूँ, कहा जु मान हमार।
जाका गल तुम काटिहो, सो काटिहै तुम्हार॥

कबीर सोता क्या करै, सोये होय अकाज।
ब्रह्मा का आसन गिरा, सुनी काल की गाज॥
कबीर सोता क्या करै, जागन की कर चौंक।
यह दम हीरा लाल है, गिन गिन गुरु को सौंप॥
जागन में सोवन करे, सोवन में लव लाय।
सुरत डोर लागो रहै, तार टूट नहिं जाय॥
सब धरती कागज करूँ, लेखनि सब वन राय।
सात सिंधु की मसि करूँ, हरिगुण लिखा न जाय॥
मैं अपराधी जन्म का, नखसिख भरा विकार।
तुम दाता दुखभंजना, मेरी करो सँभार॥
भक्तिदान मोहि दीजिये, गुरु देवन के देव।
और नहीं कछु चाहिये, निशदिन तुम्हरी सेव॥
दोष पराया देखकर, चले हसत हसंत।
अपना याद न आवही, जाको आदि न अन्त॥
निंदक से कुत्ता भला, जो हठ कर माँडे रार।
कुत्ता से क्रोधी बुरा, जो गुरुहिं दिवावे गार॥
कबीर मेरे साधु की, निंदा करो न कोय।
जो पै चन्द्र कलङ्क है, तो उजियारो होय॥
सातों टापू मैं फिरा, जम्बू द्वीप दे पीठ।
परनिन्दा जो ना करे, सो कोई विरला दीठ॥
साँई आगे साँच हो, साँई साँच सुहाय।
भावें लंबे केश रख, भावें घोट मुँडाय॥
साँचे कोइ न पतीजई, झूँठे जग पतियाय;
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय॥

साँचे शाप न लागही, साँचे काल न खाय।
साँचे को साँचा मिलै, साँचे माँहि समाय॥
प्रेम प्रीति का चोलना, पहिर कबीरा नाच।
तन मन वा पर वारहीं, जो कोई बोलै साँच॥
साँच बिना सुमरण नहीं, भाव बिन भक्ति न होय।
पारस में परदा रहै, कंचन किस विधि होय॥
कबीर लज्जा लोक की, बोले नाहीं साँच।
जान बूझ कंचन तजै, क्यों तू पकड़ै काँच॥
कोटि कर्म लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥
आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक।
कहै कबीर न उलटिये, वही एक की एक॥
गाली से सब ऊपजे, कलह कष्ट औ मीच।
हार चले सो संत है, लाग मरे सो नीच॥
ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपा शीतल होय॥
बोली तो अनमोल है, जो कोई जाने बोल।
हिय तराजू तोल कर, तब मुख बाहर खोल॥
कुबुध कमानी चढ़ रही, कुटिल वचन का तीर।
भर भर मारे कान में, सालै सकल शरीर॥
कुटिल वचन सबसे बुरा, जार करै तन छार।
साधु वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार॥
चोट सहेली शेल की, पड़ते लेय उसास।
चोट सहारे शब्द की, तास गुरु मैं दास॥

शब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जाने बोल।
हीरा तो दामों मिले, शब्द का मोल न तोल॥
शीतल शब्द उचारिये, अहं आनिये नाहिं।
तेरा प्रीतम तुझ में, दुश्मन भी तुझ माहिं॥
जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप॥
गुरु को छोटा जानकर, दुनिया आगे दीन।
जीवन को राजा कहें, माया के आधीन॥
चलो चलो सब कोइ कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक औ कामिनी, दुर्गम घाटी दोय॥
परनारी के राचने, सीधा नरके जाय।
तिनको यम छोड़ें नहीं, कोटिन करें उपाय॥
नारी की झाँई परत, अन्धे होत भुजंग
कबीर तिनकी कौन गति, जो नित नारी के संग॥
कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ शूरमा, जात वरण कुल खोय॥
नारि पराई आपनी, भोगों नरके जाय।
आग आग सब एकसी, हाथ दिये जर जाय॥
नारि नशाये तीन गुण, जो नर पासे होय।
भक्ति मुक्ति ध्यान में, बैठ न सक्के कोय॥
एक कनक औ कामिनी, तजिये भजिये दूर।
गुरु बिच डारे अन्तरा, यम देसी मुख धूर॥
नारी तो हम भी करी, जाना नहीं विचार।
जब जाना तब परिहरी, नारी बड़ी विकार॥

छोटी मोटी कामिनी, सब ही विष की बेल।
बैरी मारे दाँव से, वह मारे हँस खेल॥
कञ्चन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्षा, दुर्लभ तजनी येह॥
सुखको सागर शील है, कोइ न पावे थाह।
शब्द बिना साधु नहीं, द्रव्य बिना नहिं शाह॥
चाह मिटी चिंता गई, मनुवां बे परवाह।
जिनको कछु न चाहिये, सोई शाहनशाह॥
माँगन गए सो मर रहे, मरें सो माँगन जाहिं।
तिन से पहले वे मरें, जो हात कहत हैं नाहिं॥
माँगन मरण समान है, मत कोई माँगो भीख।
माँगन से मरना भला, यह सत गुरुकी सीख॥
अनमाँगा तो अतिभला, माँगा लिया नहि दोष।
उदर समाना माँगले, निश्चय पावे मोष॥
मरजाऊँ माँगू नहीं, अपने तनु के काज।
परमारथ के कारणे, मोहि न आवै लाज॥
कबीर यह मन मसखरा, कहूँ तो माने रोश।
जा मारग साहिब मिलें, ताहि न चालें कोश॥
सुमरनकी सुधि यों करो, ज्यों सुरभी सुत माहि।
कहै कबीर चारो चरत, बिसरत कबहूँ नाहिं॥
सुमरनकी सुधि यों करो, जैसे दाम कङ्गाल।
कहै कबीर बिसरैं नहीं, पल पल लेय संभाल॥
कबीर सो मुख धन्य है, जेहि मुख निकसे राम।
देही किसकी बापुरी, पवित्र होय सब ग्राम॥

बात बनाई जग ठग्यो, मन पर बोध्यो नाहिं।
कबीर यह मन ले गया, लख चौरासी माहिं॥
कबीर मन मैला भया, यामें बहुत विकार।
यह मन कैसे धोइये, साधो करो विचार॥
गुरू धोबी शिष कापड़ा, साबुन सिरजनहार।
सुरत सिला पर धोइये, निकसे रङ्ग अपार॥
यह तो गति है अटपटी, झटपट लखे न कोय।
जो मनको खटपट मिटे, चटपट दर्शन होय॥
साधू भया तो क्या हुआ, माला पहरी चार।
बाहर भेष बनाइया, भीतर भरी भँगार॥
दाढ़ी मूँछ मुँडाय कर, होगया घोटम घोट।
मनको क्यों नहिं मूँडिये, जामें भरो है खोट॥
रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥
इस दुनियाँ में आयकर, छोड़ देय तू ऐंठ।
लेना होय सो जल्द ले, उठी जात है पैंठ॥
कबीर सब जग निरधना, धनवंता नहिं कोय।
धनवंता सोइ जानिये, जाके रामनाम धन होय॥
कबीर ते नर अन्ध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु मेलसी, गुरु रूठे नहिं ठौर॥
मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागत है मोर॥
पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान।
एक म्यान में दो खड़ग, देखी सुनी न कान॥

कबीर लूटना है तो लूटलो, राम नाम की लूट।
फिर पीछे पछतायगा, जब प्राण जायँगे छूट॥
हरिजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा तो हरि से मिलै, जीता यम के द्वार॥
मन फुरनासे रहित कर, जौनी विधि से होय।
चहे भक्ति चहे ध्यान कर, चहे ज्ञान से खोय॥
गोधन गज धन बाजि धन, और रत्न धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूल समान॥
एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुन आध।
भीखा संगति साधु की, कटैं कोटि अपराध॥
करत करत अभ्यास के, दुर्मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ही, शिलपर करत निशान॥
जननी जने तो भक्त जन, के दाता के शूर।
नाहीं तो तू बाँझ रहु, काहि गँवावै नूर॥
अजगर करै न चाकरी, पक्षी करै न काम।
दास मलूका यों कहै, सब के दाता राम॥
भोजन छाजन को नहीं, सोच करैं हरिदास।
विश्वभरण प्रभु करत हैं, सो क्यों रहै निरास॥
गिरह गाँठ नहिं बाँधते, जब देवे तब खाहिं।
गोबिन्द तिन पाछे फिरैं, मत भूखे रह जाहिं॥

माया सगी न मन्न सगा, सगा न यह संसार।
परशुराम या जीवको, सगा सो सिरजनहार ॥
जाको प्रेम पियास है, ताको नींद न भूख।
कह दुनीदास अमृतकिये, जो जो सगले दूख ॥

सुदामा की बारहखड़ी

श्रीकमल नयन नारायण स्वामी। बसैं द्वारका अन्तरयामी ॥
वासुदेव संकर्षण छाजैं। प्रद्युम्न अनिरुद्ध बिराजैं ॥
कक्का कलियुग नाम अधारा। प्रभु सुमिरे भव उतरे पारा ॥
साधु संग कर हरि रस पीजै। जीवन जन्म सुफल कर लीजै ॥
खख्खा खोजा सकल जहाना। जाको गावैं वेद पुराना ॥
निर्भय नाम हरी का लीजै। चरण कमल को नाम धरीजै ॥
गग्गा गुण गोबिन्द के गावो। माया जाल भूल जनि जावो ॥
धन जोबन रन रंग तरंगा। छिन में छार होय यह अंगा ॥
घघ्घा घट घट बोले भाई। जल थल में प्रभु रहे समाई ॥
ऊँच नीच ज्ञान कर देखो। एकहि ब्रह्म सकल में पेखो ॥
नन्ना निगम खोज कर देखो। दूजा और नहीं कोइ लेखो ॥
सप्त द्वीप और ब्रह्मण्डा। नामहि छाप रह्यो नवखण्डा ॥
चच्चा चित निश्चय करि राखो। मिथ्यावाद झूठ मति भाखो ॥
सत्य शब्द हो होत प्रमाना। झूठ वचन सो पाप समाना ॥

छछ्छा छल बल तजो विकारा। निर्मल नाम जपौ इकसारा ॥
काम क्रोध को तजो प्रसंगा। सदा रहो सन्तन के संगा ॥
जज्जा जपौ जगत्पति ईशा। जाको ध्यावें सुर तेंतीसा ॥
निशिवासर रहिये लौ लाई। हरिपदकमल सदा सुखदाई ॥
झझ्झा झेर न कीजो भाई। सिर पर काल रह्यो मँडराई ॥
चेतन हो हरि शरणे रहिये। काल त्रास काहे को सहिये ॥
नन्ना निमिष निमिष हरिरूप निहारो। चितते ध्यान पलक नहिं टारो॥
आठों याम रहो लौ लाई। चित चरनन में रहो समाई ॥
टट्टा टारो जग को नाता। नहीं कोइ मात पिता सुत भ्राता ॥
हरिसों हितू न है कोइ अपना। जग व्यवहार रैन का सपना ॥
ठठ्ठा ठाकुर परम सनेही। जिन यह दीन्हीं सुन्दर देही ॥
नर देही को लाहो लीजै। प्रेम मग्न हो हरिरस पीजै ॥
डड्डा डाँवाडोल चित्त जनिकरो। हृदय ध्यान श्रीहरि को धरो ॥
आन देव काहे को ध्यावो। दृढ़ विश्वास बिष्णुगुण गावो ॥
ढड्ढा ढूँढ़न कहाँ जाइये भाई। रोम रोम प्रभु रहे समाई ॥
पिण्ड ब्रह्माण्ड रह्यो सम पूरा। सदा निकट हरि बाहि न दूरा ॥
नन्ना नाम हरि को लीजै। हरि भक्तन की सेवा कीजै ॥
साँची भक्ति भगवत को भावै। प्रेम सहित रसना गुण गावै ॥
तत्ता तेरी सकल कमाई। नर देही सुमिरन को पाई ॥
हरि भज गर्भवासतें छूटो। राम नाम ऐसो धन लूटो ॥

थथ्था थोरा जीवन भाई। हरि बिन जन्म अकारथ जाई ॥
चेतन होय हरिनाम उचारों। तयका त्रिविध ताप निवारो ॥
दद्दा देखत ही व्यवहारा। माया जाल बध्यो संसारा ॥
बन्धनते छूटन सो चहिये। शरण जाय सन्तन के रहिये ॥
धध्धा धरनीधर हृदय धर भाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई ॥
सदा समीप निमिष नहिं तरई। भक्तजनों की सेवा करई ॥
नन्ना नेह हरीसों लावो। प्रेम मग्न रसना गुण गावो ॥
द्विविधा धर्म तजो मन आशा। सन्त जनन को कीजै साथा ॥
पप्पा पड़े पड़े सब जन्म गँवाया। गुणावाद प्रभुको नहि गाया ॥
माया जाल भूल रह्यो अन्धा। जन्म गँवायो कर कर धन्धा ॥
फफ्फा फिर फिर परे मोहके फंदा। अजहूँ न चेते मूरख अन्धा ॥
गुरू चरननकी धर गन आसा। हरि भज मेटो यमकी त्रासा ॥
बब्बा बोलो अमृत बानी। स्नेह प्रीत रसना गुण सानी ॥
हरि हीरा हृदय धरि राखो। कटुवचन मुखते मत भाखो ॥
भभ्भा भूल्यो मन समझावो। जासों भवजल फेर न आयो ॥
ऐसी भक्ति करो मन मेरा। जरा मरण होवैं नहि तेरा ॥
मम्मा माया जाल भवसागर भारी। धीमर काल मीन संसारी ॥
जाल लिये यम फिरत अहेरा। हरि विमुखन पर देत दरेरा ॥
यय्या यह अवसर नहिं बारंबारा। ताते पुनि पुनि करत पुकारा ॥
मनवाँ मित्र तुम चतुर सुजाना। विषरस छोड़ भजो भगवाना ॥

ररी रटन हरीसों लावो। हीरा जन्म मत वाद गुमावो॥
ऐसा हीरा जो गम जाई। अवसर चूके फिर पछताई॥
लल्ला लाल अमोलक मिलि हरिशरना। तन भंडार जतन करि धरना॥
प्रभु लाल गुरु देव लखाया। तृष्णा लोभ सब दूर भगाया॥
बब्बा विन गुरु हारि जैये। जासों वस्तु अगोचर लहिये॥
वार बार नावों पद माथा। उन पदकमल चरण चितदाता॥
सस्सा सद्गुरु की का करूँ बड़ाई। महिमा मुखते बरनि न जाई॥
चित लांगा सद्गुरु के चरणों। रसना एक कहाँ लगि वरणों॥
षष्षा खींचलियो गुरु अपनीओरा। माया फंद पलक में तोरा॥
निर्भय भये पाप सब त्यागे। जब गुरु चरणोंमें चित लागे॥
शश्शा सोच विचारमिटे जिय जबते। दीपक ज्ञान दिये गुरु तबते॥
नाश्यो तिमिर भयो परकाशा। मानों रवि पूरण करि आशा॥
हहा हारिगये पाप और पछतापा। श्रीगुरुचरण कमल परतापा॥
जैसे धुन्ध चहूँ दिशि घेरा। प्रगटे भानु जब भये उजेरा॥
लक्षा लेवे को हरिजूको नामा। देवे को अन्न दान समाना॥
धरने को प्रभुजी का ध्याना। सेवन को गुरु चरन समाना॥
छच्छा छाड़न विषय बदन जो चहिये। सतगुरुके शरनन हो रहिये॥
नाम मधुर रस पियो सुजाना। गर्भवास नहीं होय अपाना॥
बार खड़ी आनन्द गुण गाऊँ। सब संतन को सीस नवाऊँ॥
दीन पतित है दास सुदामा। नमस्कार गुरुदेव प्रनामा॥

॥ इति श्रीसुदामाजी की बारहखड़ी समाप्त॥

श्री भगवान भजनाश्रम, वृन्दाबन

(श्री भगवन्नाम प्रचारक प्रमुख धार्मिक एवं पारमार्थिक संस्था)

यह तो आप जानते ही हैं कि श्री वृन्दावन धाम हिन्दुओं का प्रधान तीर्थ है। इस स्थल की पावन रज में लोट लोट कर भगवान् श्री कृष्ण ने इसे पूजनीय बना दिया है और इसी कारण समस्त भारत से लाखों हिन्दू श्रद्धा और प्रेम से यहाँ की यात्रा करते हैं। साथ ही बहुत सी वृद्ध एवं अनाथ विधवायें भी अपना शेष जीवन व्रजधाम में व्यतीत करने के पावन उद्देश्य से अपना घरबार तथा सगे सम्बन्धी छोड़कर यहां आ जाती हैं। भारत इस समय एक निर्धन देश है और यहाँ यह सम्भव नहीं है कि हजारों की संख्या में आई हुई इन विधवाओं और वृद्धाओं के सम्बन्धी उनके भरण पोषण के लिये उनको प्रति मास सहायता भेज सकें और इसी कारण यह विधवायें वृन्दावन में अपनी उदरपूर्ति के लिये प्रत्येक यात्री से गिड़गिड़ाकर भिक्षा मांगती हुई दृष्टिगोचर होती थीं। अब से ३० वर्ष पूर्व इस दुरावस्था को देखकर अनेक सद्गृहस्थ तथा धनी मानी धार्मिक सज्जनों का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने सम्वत् १९७३ में 'श्री वृन्दावन भजनाश्रम' नाम से एक परमोपयोगी संस्था की स्थापना की और उसे चलाने के लिये एक सुदृढ़ ट्रस्ट बोर्ड बना दिया गया। ट्रस्टियों के निर्णय से यह विधान बनाया गया कि भजनाश्रम में नित्य जितनी माइयां आवें उनसे ४॥ घंटे प्रातः तथा ४॥ घंटे सायं श्री भगवद् कीर्तन कराया जाये और उन्हें

उदर पोषण के लिये अन्न एवं पैसे दिये जावें। भजनाश्रम स्थापित होते ही नित्य प्रति सैकड़ों की संख्या में गरीब तथा आश्रयहीन वृद्धायें तथा विधवायें आश्रम में आने लगीं और परम पावन, कल्याणकारी श्री भगवन्नाम कीर्तन करते हुए अपना मानव जीवन सफल करने लगीं। इस कार्य की उत्तरोत्तर वृद्धि होते देखकर एक द्वितीय संस्था 'भगवान् भजनाश्रम' के नाम से सं० १९९० में स्थापित की गई तथा उसका भी ट्रस्ट बोर्ड बना दिया गया। इन दोनों भजनाश्रमों का प्रबन्ध योग्य ट्रस्टियों द्वारा सुचारु रूप से हो रहा है।

इस समय इन आश्रमों में लगभग ८०० अनाथ गरीब स्त्रियां जिनमें अधिकांश निराश्रित विधवायें हैं नित्य प्रति अनन्त भगवद्नामों का कीर्तन करती हुई भगवद्भजन में लीन रहती हैं, अष्ट-पहर कीर्तन भी अलग होता है। इन भजन करने वाली माइयों को सवेरे ४।। घण्टा भजन करने पर =)।। ढाई आना अन्न के वास्ते दिया जाता है तथा शाम को ४।। घण्टे भजन करने पर =) आना ऊपर खर्च के वास्ते दिया जाता है और समय समय पर आवश्यकतानुसार वस्त्र भी दिये जाते हैं और २०० के लगभग अपाहज वृद्धायें जो आश्रम में आने के अयोग्य हैं अपने घरों में बैठी हुई भगवद्भजन किया करती हैं जिन्हें भी कुछ सहायता दी जाती है।

भारत व्यापी तेजी के कारण इस समय इन संस्थाओं का खर्च लगभग ८५००) रु० आठ हजार पांच सौ रुपये प्रति मास हो गया है जब कि स्थायी आय, मासिक चन्दा तथा

ब्याज केवल ३०००) रु० मासिक है। आज हम इसी कमी की पूर्ति करने के लिये आप जैसे धनी मानी तथा धार्मिक महानुभाव की सेवा में अपील करते हुए निवेदन करते हैं कि आपकी अतुल दानराशि में से अधिक से अधिक भाग इन संस्थाओं को प्राप्त होना चाहिये। इन संस्थाओं द्वारा आपके धन का सदुपयोग का विश्वास दिलाते हुए हम यह भी बता देना चाहते हैं कि इन संस्थाओं में दिये गये आपके धन से अनेक प्राणियों का उदर पोषण होगा एवं कोटि कोटि भगवन्नाम जप के पुण्य प्रताप का आपको पूर्ण लाभ होगा।

हमें पूर्ण आशा है कि श्रीमान् जी हमारी प्रार्थना पर उचित ध्यान देंगे और श्रद्धानुसार संस्थाओं की सहायता करते हुए जनता जनार्दन की अधिकाधिक सेवा के पावन अनुष्ठान में सहायक बनेंगे।

प्रार्थी—

जानकीदास पाटोदिया
प्रधान

गौरगोपाल मानसिंहका
मन्त्री

नोट—१. प्रार्थना है कि आप जब ब्रजधाम की यात्रा को पधारें तो इन आश्रमों में पधार कर यहां के कार्यों का अवलोकन अवश्य करें।

२ अपने एवं अन्य नगर के धर्म प्रेमी दानदाताओं के कुछ नाम व पते भी हमें भेजने की कृपा करें जिससे हम उनसे संस्थाओं की सहायता के लिए अपील कर सकें।

३. बीमा या मनीआर्डर द्वारा सहायता मन्त्री श्री भगवान भजनाश्रम, पोस्ट वृन्दावन (मथुरा) तथा मन्त्री श्री वृन्दाबन भजनाश्रम, पोस्ट वृन्दाबन (मथुरा) के पते से भेजिये।

४. कृपया सहायता एक मुश्त भेजिये अथवा मासिक या वार्षिक सहायता भेजने की कृपा कीजियेगा।

५. आश्रम की ओर से ऐसा प्रबन्ध भी है कि जो दानी महानुभाव अपनी ओर से भजन कराना चाहते हों वह ८।≡) रु० मासिक प्रत्येक माई के हिसाब से भेजकर जितनी माइयों द्वारा चाहें भजन करा सकते हैं। प्रति दिन ६ घण्टे में हर एक माई लगभग एक लाख भगवन्नाम उच्चारण कर सकती है।

६. आश्रम द्वारा निकलने वाले धार्मिक मासिक पत्र "नाम-माहात्म्य" में भजनाश्रमों का मासिक आय-व्यय का विवरण एवं दान देने वाले सज्जनों के शुभ नाम मय दान की रकम के प्रकाशित होते हैं।

मुद्रकः—
श्री दानविहारीलाल शर्मा, विद्यालय प्रेस, वृन्दावन।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे